अपनी बात

15 अगस्त 2014 को भारत के प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्र–पिता महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती तक देश को साफ–सुथरा और खुले में शौच से मुक्त बनाने के लिये स्वच्छ भारत मिशन का आरम्भ किये जाने की घोषणा के बाद से ही मिशन के लक्ष्य को पाने के लिये केन्द्रीय सरकार के स्तर पर प्रयास आरम्भ हो गये। 2 अक्टूबर 2014 को मिशन के क्रियान्वयन संबंधी दिशा–निर्देश जारी होने के बाद राज्य सरकारों ने भी इस काम के लिये अपने प्रयास आरम्भ किये। इसी दौरान जमीनी स्तर पर काम करने वाली स्वयं सेवी संस्थाओं ने भी सरकारी और दान दाता संस्थाओं के रूझान को देखते हुये स्वच्छ भारत मिशन में अपनी भूमिकाओं को तलाश कर विभिन्न प्रकार के हस्तक्षेप आरम्भ किये।

इन पूरे प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि गाँव के स्तर पर कुछ अच्छे अनुभव सामने आने लगे। किन्तु ऐसे अच्छे अनुभवों की संख्या बहुत कम थी। छत्तीसगढ़ में भी ऐसे कुछ अनुभव दिखे किन्तु उसमें समुदाय के सामान्य लोगों की संख्या भी बहुत कम थी। ऐसे में यह महसूस किया गया कि यदि समुदाय के सामान्य लोगों के अच्छे अनुभवों को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाया जाये तो परिणामों को पाने की गति को बढ़ाया जा सकता है।

प्रिया ने छत्तीसगढ़ के अपने पिछले अनुभवों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में संचार माध्यमों की स्थिति को ध्यान में रखकर लोक–संवाद के माध्यम से अच्छे अनुभवों और उन अनुभवों से जुड़े समाज–प्रवर्तकों को आगे बढ़ाने का प्रयास किया जिसमें उसे यूनिसेफ का सहयोग मिला।

छत्तीसगढ़ में 'स्वच्छ भारत मिशन–ग्रामीण की सफलता के लिये लोक–संवाद और पैरवी' नामक परियोजना के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न जन–संवाद कार्यक्रमों में स्वच्छता के काम से जुड़े समाज–प्रवर्तक लोगों के अनुभवों को साझा करने का अवसर मिला। इस दौरान उनके काम को एक दस्तावेज का स्वरूप देने का काम भी किया गया। दस्तावेजीकरण के पूरे काम में भी समाज–प्रवर्तकों ने पूरा यहयोग दिया।

राज्य के विभिन्न स्थानों पर आयोजित जन–संवाद के दौरान समाज–प्रवर्तकों के काम का दस्तावेजीकरण करने में प्रिया छत्तीसगढ़ के सहयोगियों एवन पटेल, जलेश्वर कैवर्त्य, अंकुर सिंह और प्रवीण सिंह ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। प्रिया के संस्थापक अध्यक्ष डा0 राजेश टंडन ने लगातार चर्चा के दौरान इस प्रकार के दस्तावेजों को तैयार करने के लिये प्रेरित किया। प्रिया (नई दिल्ली) के सहयोगियों मनोज राय, सुमित्रा श्रीनिवासन और देवी दत्त पंत के सहयोग से इस दस्तावेज को यह स्वरूप मिल पाया है।

इस दस्तावेज पर आपके विचारों का स्वागत रहेगा।

डा0 आलोक पाण्डेय
प्रिया नई दिल्ली।

केस स्टडी

नंबर 01 **मई, 2017**

स्वच्छ भारत–स्वच्छ विद्यालय की राह बनाते शिक्षक

दन्तेवाड़ा जिले के बछेली ग्राम पंचायत में स्थित पूर्व माध्यमिक विद्यालय की शिक्षिका मनोनिता मिन्ज। पढ़ाई के साथ ही विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विकास के प्रति भी सजग। पिछले कुछ वर्षों से साफ–सफाई और स्वच्छता को लेकर विद्यालय के साथ ही ग्राम पंचायत के स्तर पर नियमित प्रयास।

नाम : मनोनिता मिन्ज
उम्र : 45 वर्ष
षिक्षा : एम.ए., बी.एड.
ग्राम : बछेली
वि.ख. : दन्तेवाड़ा

मनोनिता मिन्ज बातचीत के दौरान बताती हैं कि वह किस तरह बच्चों को साफ–सफाई का महत्व बताते हुये उनके नाखून, बाल, कपड़े और जूते आदि की जांच करती हैं। इसी दौरान वह सभी विद्यार्थियों को स्वच्छता के लिए प्रेरित भी करती हैं। मनोनिता मिन्ज ने इस काम के लिये मध्यान्ह भोजन को माध्यम बनाया। उन्होंने पहले छात्र–छात्राओं को समझाया कि मध्यान्ह भोजन करते समय थाली और भोजन का स्थान स्वच्छ होना चाहिए। बाद में स्वच्छता की ओर एक कदम आगे बढ़ते हुये उन्होंने विद्यार्थियों को हाथ धोने के लिए साबुन का प्रयोग करने को कहा। उन्होंने विद्यार्थियों को यह भी समझाया कि कैसे गंदगी से कई तरह के कीटाणु और रोगाणु हाथ और मक्खियों के द्वारा भोजन मे प्रवेश करके बिमारी फैलाते हैं। इन सबका नतीजा यह हुआ कि अधिकांश विद्यार्थी सफाई पर ध्यान देने लगे और साफ–सुथरे कपड़ों मे विद्यालय आने लगे। उन्होंने छात्र–छात्राओं को बाथरूम जाते समय शौचालय के उपयोग और स्वच्छता की बातों का ध्यान रखने के लिए भी बताया है।

मनोनिता मिन्ज बताती हैं कि दंतेवाड़ा जिले मे गठित स्वच्छ भारत मिशन की टीम और उनके प्रेरक भी स्वचछता को बढ़ाने के काम में नियमित रूप से मदद करते हैं। स्कूल के विद्यार्थियों के साथ मिल कर किये जा रहे प्रयासों से अब बच्चे अपने माता–पिता से घरों मे शौचालय निर्माण की बात कर रहे हैं। कुछ बच्चों के घरों में शौचालय निर्माण का काम शुरू भी हो गया है। मनोनिता का मानना है कि बाकी बचे कुछ घरों में भी जल्दी ही शौचालय का निर्माण हो जायेगा।

स्वच्छता के साथ ही मनोनिता विद्यालय के बच्चों में बढ़ रहे गुड़ाखू एवं गुटके के नशे की आदत को समाप्त करना चाहती हैं। नशा छुड़ाने के लिए मनोनिता ने नशा करने वाले बच्चों की सूची बनायी है। चिन्हित बच्चों के साथ बात करके मनोनिता उन्हें नशा करने से होने वाले नुकसान के बारे मे बताया है। हर पन्द्रह दिन में बच्चों से बात करके उन्होंने यह समझने का प्रयास किया कि किन बच्चों ने नशा करना छोड़ा है। उनके इस प्रयास से बहुत से बच्चों ने गुटके और गुड़ाखू का सेवन छोड़ दिया है।

मनोनिता का कहना है कि स्वच्छता के लिए आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रम मे शामिल होकर उन्हे स्वच्छता की दिशा मे और बेहतर काम करने की प्रेरणा मिलती है।

ज्ञान. आवाज़. लोकतंत्र.
प्रिया

unicef
for every child

केस स्टडी

नंबर 02 **मई, 2017**

स्वच्छता की राह दिखाती नेत्रहीन जानत्री बाई

कुंआ मालगी गाँव की 65 वर्षीय नेत्रहीन जानत्री कुर्रे। आँखों की रोशनी जाने के बाद भी स्वच्छता के प्रति दूरदृष्टि। स्वयं के शौचालय की मांग पूरी होने के बाद अब दूसरों के लिये प्रेरणा का स्रोत।

नाम : जानत्री कुर्रे
उम्र : 65 वर्ष
षिक्षा : अनपढ़
ग्राम : कुंआ
मालगी वि.ख. :

जानत्री कुर्रे अपने पति भागवत कुर्रे एवं नाती–नातिन के साथ रहती हैं। उनके 2 बेटे एवं 2 बेटी अपने परिवार के साथ अलग रहते हैं। पति भागवत कुर्रे उम्र अधिक होने कारण शारीरिक रूप से पहले की तरह सक्षम नही है। लगभग 5 वर्ष पूर्व जानत्री बाई की बीमारी की वजह से आखों की रोशनी चली गयी जिसके बाद वह पूरी तरह से अपने परिवार पर निर्भर हो गयीं। लेकिन उन्होने हिम्मत नहीं हारी एवं अपना पूरा काम स्वयं से करने की कोशिश करने लगी। सबसे ज्यादा दिक्कत उन्हें रात के समय शौच जाने में होती थी क्योंकि घर में शौचालय नहीं था। बाहर खुले मे शौच करने के लिये जाने से दुर्घटना की आशंका भी बनी रहती थी।

स्वच्छ भारत मिशन के अन्तगर्त गाँव मे शौचालय निर्माण शुरू होने पर जानत्री बाई ने अपने घर में भी शौचालय बनाने की सोची। उन्होंने ग्राम पंचायत के सदस्यों से खुद जाकर मिलने और यह जानने का प्रयास किया कि क्या उनके घर शौचालय का निर्माण किया जा सकता है। बहुत प्रयास के बाद जब ग्राम पंचायत ने उनके घर में शौचालय निर्माण के लिये सहमति जताई तो जानत्री बाई को बहुत खुशी मिली।

षौचालय निर्माण के पूर्व एवं बाद की स्थिति का वर्णन करते हुए जानत्री बाई कहती हैं कि अब वह पहले से अधिक सुरक्षित और संतुष्ट महसूस करती हैं। जानत्री बाई बताती हैं कि शौच जाने के लिए किसी और पर निर्भर रहना उचित नही समझा। इसके लिये उन्होंनें स्वयं एक पहल की और घर के बाहरी दरवाजे से शौचालय तक एक रस्सी बांध दी जाए जिसके सहारे वह अपने घर से करीब 100 मी. दूर बने शौचालय का आसानी से उपयोग कर सकें।

जानत्री बाई बताती हैं कि घर में शौचालय बन जाने के बाद अब वह गाँव की सभी महिलाओं को शौचालय बनवाने के लिये कहती हैं। उनके घर पर जितनी भी महिलायें आती हैं जानत्री बाई उन्हें अपना शौचालय दिखाना नहीं भूलती हैं। आस–पास के गाँव के लोग भी आंखो से अक्षम जानत्री बाई द्वारा शौचालय को बनवाने और उसके उपयोग करने की मिसाल देते हैं।

ज्ञान. आवाज़. लोकतंत्र.
प्रिया

unicef
for every child

केस स्टडी

नंबर 03 **मई, 2017**

शौचालय के उपयोग के लिये लिया संकल्प

कबीरधाम जिले के छोटे से गाँव पुटपुटा की 36 वर्षीय कला धुर्वे। आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण खेती–मजदूरी के साथ लघु वनोपज एकत्र करके अपने परिवार का पालन पोषण। अपने घर के शौचालय का स्वयं निर्माण जिसकी गुणवत्ता गाँव मे निर्मित अन्य शौचालयों से अपेक्षाकृत बेहतर।

नाम : कला धुर्वे
उम्र : 36 वर्ष
षिक्षा : अनपढ़
ग्राम : पुटपुटा
वि.ख. : पण्डरिया

कबीरधाम जिले के पण्डरिया ब्लॉक से 25 किमी दूर वन क्षेत्र से लगे पुटपुटा गाँव की कला धुर्वे अनुसूचित जनजाति परिवार से हैं। कला बाई अपने पति अंजोर धुर्वे के साथ रहती हैं। दोनों सदस्य खेती के अलावा मजदूरी एवं लघु वनोपज एकत्र करके अपने परिवार का पालन–पोषण करते हैं। कई बार खेतों में काम नहीं मिलने पर कला बाई को निर्माण के काम में मिस्त्री के साथ मिलकर मजदूरी करना पड़ता है। कला बाई को जब गाँव के लोगों ने शौचालय निर्माण के बारे में बताया तो उन्हें लगा कि इस योजना से उन्हें कुछ पैसे मिल जायेंगे जो उनके परिवार के लिये सहारा बनेगा।

शौचालय निर्माण के लिये उन्होंने ग्राम पंचायत भवन से लेकर सरपंच के घर तक गुहार लगाई। पंचायत के लोगों ने कला बाई को बताया कि उसे शौचालय निर्माण के लिये सामग्री तो मिल जायेगी किन्तु शौचालय निर्माण का काम उन्हें स्वयं से करना होगा। कला बाई को शुरू में यह अजीब सा लगा किन्तु बाद में उन्होंने इस काम को चुनौती के रूप में लिया। इस चुनौती भरे काम में उनके निर्माण के काम का अनुभव कला बाई के साथ था। लेकिन फिर भी शौचालय निर्माण का काम शुरू करने से पहले उन्होंने गाँव के कुछ परिवारों में जाकर शौचालय निर्माण के तरीके को समझा। इसके बाद ग्राम पंचायत से मिली सामग्री का उपयोग करके स्वयं ही अपने घर के शौचालय का निर्माण 3 दिन में पूरा कर लिया। इस काम में उन्हें अपने भाई का भी सहयोग मिला जो स्वयं भी मिस्त्री का काम करते हैं। शौचालय बन जाने के बाद गाँव के लोगों ने महसूस किया कि कला बाई द्वारा बनाया गया शौचालय गुणवत्ता के लिहाज से गाँव मे निर्मित अन्य शौचालयों से अपेक्षाकृत बेहतर है।

कला बाई बताती हैं कि पहाड़ी क्षेत्र में गर्मी के दिनों में हैण्डपम्प का पानी सूख जाता हैं एवं पीने का पानी भी दूर से लाना पड़ता है। ऐसे में शौचालय के उपयोग के लिए पानी लाना मुश्किल कार्य है। बावजूद इसके उनके परिवार ने शौचालय का उपयोग करने का मन बना लिया है क्योंकि उनका मानना है कि शौचालय से सुविधा के साथ सुरक्षा भी होती है।

केस स्टडी

नंबर 04 **मई, 2017**

साईकिल यात्रा से दे रहे स्वच्छता का संदेश

राजनांदगांव जिला मुख्यालय से नौ किमी दूर ग्राम तिलई के सफील खान ने स्वच्छ भारत मिशन को अपना अभियान समझकर हर घर बन रहे शौचालय को मूर्त रूप देने के लिये स्वेच्छा से सायकिल यात्रा के द्वारा स्वच्छता का संदेश जनमानस तक पहुचाने का कार्य प्रारंभ किया है। सायकिल यात्रा के दौरान सफील खान रचनात्मक एवं सरल तरीके से संवाद करते हुये शौचालय बनाने एवं उपयोग को लेकर ग्रामीणों को प्रेरित करते हैं।

नाम : सफील खान
उम्र : 42 वर्ष
शिक्षा : 12वी
व्यवसाय: स्वयंसेवक
गांव : तेलई
वि.ख. : राजनांदगांव

गरीब परिवार से आने वाले सफील खान ने अपने परिवार के भरण–पोषण के लिये स्वैच्छिक संगठन से जुड़ कर काम करना शुरू किया। इस दौरान उनको गाव के लोगों से मिलने और उनकी समस्याओं को गहराई से समझने का मौका मिला। अपने काम को करने के दौरान सफील साईकिल से लोगों के घरों तक जाते थे। स्वच्छता के अभियान में भी उन्होंने साईकिल को ही माध्यम बनाना तय किया।

सफील खान साईकिल यात्रा के अनुभवों को साझा करते हुये बताते हैं कि जिले में स्वच्छ भारत मिशन के प्रांरभिक दौर में ग्रामीणों को इस मिशन के उद्देश्य के संबंध में केवल शौचालय के अनुदान राशि को छोड़ किसी प्रकार कि कोई जानकारी नही थी। ग्रामीणों में स्वच्छता को लेकर जागरूकता की कमी और खुले में शौच करने का व्यवहार बना हुआ था। इसी वजह से ग्राम पंचायतों के लोग शौचालय निर्माण नहीं करवाना चाहते थे।

सफील खान बताते है कि उनके द्वारा स्थानीय स्तर पर ग्रामीण एवं सामाजिक विकास कार्यो से जुड़े स्वैच्छिक संगठनों में कार्य करने के दौरान मिली सीख और अनुभव को समुदाय तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। स्वच्छता को स्वयं की जिम्मेदारी मानते हुये और व्यवहार परिवर्तन को लेकर सफील खान द्वारा साईकिल यात्रा के दौरान ग्राम पंचायतों में जाकर लोगों को खुले में शौच से होने वाले नुकसान के बारे में बताया जा रहा है। बहुत से लोगों ने उनके प्रयास और विचारों पर अमल करते हुये शौचालय का निर्माण करवाया है और नियमित रूप से उपयोग भी कर रहे है।

सफील ने अपनी गरीबी को कभी कमजोरी न समझा और अपने पिछले दो साल से अपने अभियान के कार्य में ईमानदारी से जुड़े हुए है। राजनांदगांव जिले के 75 ग्राम पंचायतों का भ्रमण कर स्वच्छता का संदेश जनमानस तक पहुचाने में कामयाब सफील ने निस्वार्थ भाव से स्वच्छता और जनसेवा के क्षेत्र में एक मिसाल पेश की है।

ज्ञान. आवाज. लोकतंत्र.
प्रिया

unicef
for every child

केस स्टडी

नंबर 05 **मई, 2017**

स्वच्छता स्थायित्व में स्वच्छता चैपियंस

ग्राम पंचायत सुर के मां कर्मा आजीविका ग्राम संगठन की मुखिया निर्मला बड़ा। बचत के द्वारा आर्थिक विकास, स्वच्छता, स्वास्थ्य और शिक्षा को बढावा देने की कोशिश। ग्राम पंचायत को खुले में शौच से मुक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान।

नाम : निर्मला बड़ा
उम्र : 35 वर्ष
शिक्षा : 12वी उत्तीर्ण
गाँव : सुर
वि.ख. : सीतापुर

सीतापुर विकासखण्ड़ का ग्राम पंचायत सुर कुछ दिन पहले ही खुले में शौच से मुक्त ग्राम पंचायत घोषित किया गया। ग्राम पंचायत के सरपंच अनिल निराला इसका श्रेय ग्राम पंचायत में बनाये गये स्वयं सहायता समूहों और इसकी मुखिया निर्मल बड़ा को देते हैं। उनके अनुसार स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने न केवल क्षेत्र में स्वच्छता और साफ–सफाई को बढ़ाने का काम किया है बल्कि अपनी बचत के माध्यम से गाँव के आर्थिक विकास, स्वास्थ्य और शिक्षा तथा कुपोषण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर काम कर रही हैं।

निर्मला बड़ा बताती हैं कि सुर ग्राम पंचायत की आबादी बहुत ज्यादा है अतः यहाँ विभिन्न योजनाओं में कुल 64 स्वयं सहायता समूह बने थे। सहमति के आधार पर सभी समूहों की लगभग 800 महिलाओं ने मां कर्मा आजीविका ग्राम संगठन को बनाना तय किया। आज सभी महिलाओं के द्वारा संगठित होकर अपनी बचत के द्वारा आर्थिक विकास के लिये अनेक प्रयास किये जा रहे हैं।

गाँव के स्तर पर स्वच्छता को लेकर किये जा रहे प्रयासों के बारे में जानकारी देते हुये निर्मला बड़ा कहती हैं कि वर्ष 2012 में गाँव को कुपोषण से निजात दिलाने के उद्देश्य से समूह के द्वारा फुलवारी कार्यक्रम की शुरूआत की गई जिसमें नवजात शिशुओं को कुपोषण और गंदगी से बचाने का प्रयास शुरू किया गया। कार्यक्रम के माध्यम से गर्भवती एवं शिशुवती महिलाओं को पूरक पोषण आहार के साथ व्यक्तिगत स्वच्छता जैसे, हाथ धुलाई, शौचालय के उपयोग आदि के बारे में जानकारी दी गई। वर्ष 2014 में स्वच्छ भारत मिशन की शुरूआत के समय समूह की महिलाओं को राज–मिस्त्री प्रशिक्षण एवं शौचालय निर्माण की तकनीकी जानकारी मिली। प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत महिला संगठन के द्वारा ग्राम पंचायत सुर में 30 प्रतिशत शौचालय का निर्माण किया गया। अन्य राजमिस्त्री द्वारा निर्माण किये जाने वाले शौचालयों की निगरानी का काम भी महिला समूह के माध्यम से किया गया। निर्मला बड़ा बताती है कि संगठन कि महिलायें सुबह–शाम खुले में शौच जाने वाले ग्रामीणों को समझाने का काम करती हैं। उनके द्वारा रात्रि चौपाल के द्वारा शौचालय के उपयोग से होने वाले लाभ से अवगत कराया जाता है। संगठन के 12 समूहों के द्वारा सम्पूर्ण ग्राम स्वच्छता के लिये कचरा प्रबंधन का कार्य किया जा रहा है जिसमें घर से निकलने वाला कचरे और आस–पड़ोस के कचरे को एकत्रित कर केंचुआ खाद का निर्माण किया जा रहा है ताकि स्थाई स्वच्छता के साथ ही आर्थिक विकास हो सके।

निर्मला बड़ा बताती है कि संगठन के प्रयास से ग्राम पंचायत सुर में शौचालय का उपयोग 95 प्रतिशत से अधिक पहुंच चुका है। उनके अनुसार संगठन की महिलाओं का मानना है कि जब तक शत–प्रतिशत शौचालय का उपयोग नही होगा तब तक यह प्रयास जारी रखा जायेगा।

ज्ञान. आवाज. लोकतंत्र.
प्रिया

unicef
for every child

केस स्टडी

नंबर 06 **मई, 2017**

युवाओं के प्रयास से गाँव बना स्वच्छ और सुन्दर

स्वच्छता के काम में युवाओं की सहभागिता और उनकी भूमिका सुनिश्चित करने के प्रयासरत देवारीभाठा ग्राम पंचायत के ईश्वरी वर्मा। गाँव को स्वच्छ बनाने के लिये युवाओं के सहयोग से एकता ग्रामोदय समिति का गठन। श्रम दान और चंदा इकट्ठा करके गरीब परिवारों के घरों में भी शौचालय निर्माण कराने में सहयोग।

नाम : ईष्वरी वर्मा
जाति : लोधी
उम्र : 37 वर्ष
शिक्षा : बी.एस.सी.
गांव : देवारी भाठ
वि.ख. : खैरागढ़

स्वच्छता अभियान के प्रारम्भिक दौर में राजनांदगांव के देवारीभाठा ग्राम पंचायत के लोग शौचालय निर्माण और उसके उपयोग से होने वाले लाभ से अंजान थे। इस बीच गाँव के कुछ युवकों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत ग्राम स्वच्छता को लेकर सरकार की पहल का पता चला तो उन्होंने इसमें अपनी भूमिका तलाशने की सोची। इसका नेतृत्व किया गाँव के ही ईश्वरी वर्मा ने। उन्होंने गाँव के अन्य युवा साथियों से बात कर एकता ग्रामोदय समिति का गठन किया और अपने गाँव को स्वच्छ बनाने का लक्ष्य तय किया।

ईश्वरी वर्मा के अनुसार सबसे पहले समिति के युवा साथियों ने सकारात्मक सोच के साथ ग्राम पंचायत के प्रतिनिधियों के साथ चर्चा की और उनके मार्गदर्शन में गाँव के लोगों को साफ–सफाई के प्रति जागरूक करने का संकल्प लिया। युवा साथियों ने पंचायत के प्रतिनिधियों और अन्य लोगों के सहयोग से स्वच्छता का संदेश घर–घर तक पहुचाया। समिति के सदस्यों ने पंचायत प्रतिनिधियों के सहयोग से प्रत्येक रविवार को गली–मोहल्ला सहित नलकूप एवं कुओं की साफ–सफाई करना तय किया। सम्पूर्ण ग्राम स्वच्छता को ध्यान में रखते हुये रानी अंवती बाई बलिदान महोत्सव पर ग्रामीणों को संदेश देने के लिये एक संकल्प के रूप में लगभग 7 हजार लोगों को 50 पुरानी और खाली बोतलों को साफ करके उनमें पानी भर–भर कर पानी पिलाने का कार्य किया गया। यह पहल डिस्पोजल से होने वाले कचरा एवं गंदगी से निजात पाने के लिये किया गया।

समिति के सदस्यों ने गाँव के आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के घरों में शौचालय बनवाने के काम में न केवल श्रम दान किया बल्कि जरूरत पड़ने पर चंदा इकट्ठा कर उनके शौचालय निर्माण का काम पूरा करवाया। इन सारे प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि देवारीभाठा को खुले में शौच से मुक्त ग्राम पंचायत होने का गौरव प्राप्त हुआ।

ज्ञान. आवाज़. लोकतंत्र.
प्रिया

unicef
for every child

केस स्टडी

नंबर 07 **मई, 2017**

ग्राम स्वच्छता की बनी मिसाल

जीवन में स्वच्छता के महत्व पर समझ रखने वाली लीलावती सिंह। शौचालय के निर्माण कार्य में सहयोग देने और उसकी गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिये टीम वर्क पर विश्वास। ब्लू बिग्रेड की सक्रिय सदस्य।

नाम : लीलावती सिंग
उम्र : 50 वर्ष
शिक्षा : 8वी
गांव : सरगंवा
वि.ख. : उदयपुर

सरगुजा जिले के विकासखंड उदयपुर अंतर्गत ग्राम पंचायत सरगंवा की लीलावती सिंह बताती हैं कि जब स्वच्छ भारत मिशन की शुरूआत हुई तब उनके गाँव में स्वच्छता को लेकर हालात अन्य गाँवों की ही तरह बहुत अच्छे नहीं थे। ग्रामीणों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता की कमी और खुले में शौच जाने की आदत बनी हुई थी। स्वच्छ भारत मिशन में पंचायत के प्रतिनिधियों के द्वारा ग्राम स्वच्छता को लेकर की गई बैठकों में शौचालय निर्माण और उसके उपयोग से होने वाले लाभ और गंदगी से होने वाली बीमारियों के बारे में जानकारी दी गई। इससे लोगों ने शौचालय बनवाने के लिये सहमति तो जाहिर की किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में बरसों से चली आ रही खुले में शौच करने की परंपरा पर रोक लगाना आसान नही था। कुछ गाँव वालों ने शौचालय निर्माण के बाद भी खुले में जाने की अपनी आदत नही बदली। शौचालय के गुणवत्ता, पानी के अधिक अपयोग, शौचालय के कारण घर मच्छर पनपने जैसी बहुत सी बातें कह कर लोग खुले में शौच करते थे।

ऐसे में ग्राम पंचायत जीवन में स्वच्छता को बेहद महत्वपूर्ण मानने वाली महिला प्रोड्यूसर फॉर्मर्स कम्पनी समूह की अध्यक्ष लीलावती सिंग की अध्यक्षता में एक समूह का गठन किया जिसमें महिलाओं और पुरूषों दोनों को शामिल किया गया। टीम के सदस्यों ने घर–घर जाकर लोगों को प्रेरित किया, लोगों की गलत अवधारणाओं को दूर किया, खुले में शौच जाने वाले लोगों को समझाया और नहीं मानने पर पंचायत को अर्थदण्ड लगाने का सुझाव भी दिया। समूह ने गाँव के प्रमुख स्थानों पर स्वच्छता मत पेटी की व्यवस्था कराई जिससे खुले में शौच जाने वालों का गुप्त मतदान के माध्यम से पता चल सके और उन्हें समझाया जा सके।

लीलावती सिंग बताती है सभी के प्रयासों से उनके ग्राम पंचायत को खुले में शौच से मुक्त ग्राम पंचायत घोषित किया गया है। उनका मानना है कि अब महिलाओं में बीमारियाँ कम होंगी क्योंकि लोग अब स्व. च्छता के महत्व के बारे में समझने लगे हैं।

ज्ञान. आवाज़. लोकतंत्र.
प्रिया

unicef
for every child

केस स्टडी

नंबर 08 **मई, 2017**

शौचालय की बढ़ती माँग को श्रम–दान से करवाया पूरा

दंतेवाड़ा जिले के गीदम विकासखंड के छोटे से गाँव झोड़ियाबाड़म के रहने वाले बलराम कश्यप बताते है कि स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत संबंधित विभाग के अधिकारियों ने उनके गाँव में एक बैठक की। यह बैठक गाँव के स्कूल में आयोजित की गयी जहाँ अन्य बातों के साथ ही समुदाय आधारित सम्पूर्ण स्वच्छता के बारे में जानकारी दी गयी। इसी दौरान उन्हें जानकारी दी गयी कि शरीर में होने वाली बहुत सी बिमारियों का सीधा संबंध खुले में किये जाने वाले शौच से है। शारीरिक रूप से विकलांग बलराम को यह बात अच्छी लगी किन्तु उससे अधिक यह जानकारी उनके दिल को अन्दर तक हिला भी गयी।

नाम : बलराम कश्यप
उम्र : 45 वर्ष
शिक्षा : अशिक्षित
गाँव : झोड़ियाबाड़म
वि. ख. : गीदम

बैठक के बाद लगभग एक महीने तक गाँव में शौचालय निर्माण को लेकर फिर न कोई चर्चा हुई और न ही किसी ने शौचालय का निर्माण करना शुरू किया। बलराम भी संसाधन की कमी और दूसरी अन्य पारिवारिक जरूरतों के कारण शौचालय निर्माण की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे। लेकिन एक दिन उनकी बच्ची को बिमारी की वजह से रात में शौचालय जाना पड़ा जिसके बाद बलराम ने तय किया कि अपने घर में शौचालय बनवाना जरूरी है। बलराम के अनुसार अगले ही दिन उन्होंने सामग्री को जुटाना शुरू किया और खुद से शौचालय का निर्माण करना शुरू किया। स्वच्छ भारत मिशन के जिला स्तर के लोगों से उन्हें इस काम में तकनीकी सहयोग भी मिला। लगभग एक हफ्ते के अंदर बलराम ने अपने घर में शौचालय का निर्माण पूरा किया।

अपने शौचालय के निर्माण के बाद बलराम ने अपने गाँव (पटेल पारा) के हर घर में शौचालय बनवाने का निश्चय किया और इस काम के लिये अपना श्रम–दान देना भी तय किया। लोगों की सामग्री संबंधी समस्याओं को उन्होंने सामग्री उपलब्ध कराने वाले दुकानदारों से बात करके दूर करवाया। इस काम के लिये उन्होंने जरूरत पड़ने पर कुछ लोगों से आर्थिक सहयोग भी लिया। बलराम बताते हैं कि अधिकांश घरों में केवल पाइप, ईंट, सीट और मुर्गा का ही खर्च लगा।

बलराम का मानना है कि जहाँ प्रेम, एकता और विश्वास है वहाँ बड़े से बड़ा काम भी आसानी से हो जाता है। अपने इसी विश्वास से बलराम में अपने गाँव के साथ ही पूरे गीदम विकास खंड को ही खुले में शौच से मुक्त क्षेत्र बनवा दिया है।

ज्ञान. आवाज़. लोकतंत्र.
प्रिया

unicef
for every child

केस स्टडी

नंबर 09 **मई, 2017**

व्यक्तिगत बदलाव से गाँव बना स्वच्छ

अपने गाँव की स्वच्छता के लिये सरकारी अनुदान नहीं बल्कि स्वयं की जिम्मेदारी उसे स्वच्छ और सुन्दर बनाती है। इसी विश्वास के साथ स्वयं से प्रेरित होकर सर्वप्रथम अपने घर में शौचालय का निर्माण कर ग्रामीणों को स्वच्छता का संदेश देने वाले विनोद सिंह गोरते ग्राम पंचायत रिखी के सरपंच है।

नाम : विनोद सिंह गोरते
उम्र : 38 वर्ष
शिक्षा : 12वीं
गांव : रिखी
वि.ख. : उदयपुर

सरगुजा जिले के उदयपुर विकासखण्ड़ में स्थित रिखी गाँव आदिवासी बाहुल्य वाला क्षेत्र है। इस ग्राम पंचायत में जागरूकता की कमी से गाँव में साफ–सफाई और स्वच्छता की स्थिति बहुत खराब थी। ऐसी स्थिति में जब स्वच्छ भारत मिशन को लेकर जनपद से गाँव स्तर तक चर्चा हुई तो ग्राम पंचायत के सरपंच विनोद सिंह पर ग्राम में शौचालय निर्माण एवं स्वच्छता को लेकर अधिकारियों का दबाव बढ़ा। ऐसी स्थिति में विनोद को कुछ समझ में नही आ रहा था।

विनोद बताते है कि ग्रामवासियों के पास पैसों की तंगी और पंचायत में फंड का न होना समस्या बनी हुई थी। इसी बीच ग्राम पंचायत में जागरूकता के कुछ कार्यक्रमों का आयोजन हुआ जिसमें समस्त ग्राम वासियों को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को लेकर विस्तार से जानकारी दी गई। इससे शौचालय निर्माण के लिये ग्रामीणों के सहयोग और विश्वास को हकीकत में बदलने की उम्मीद बनी। लेकिन कार्यक्रम होने के बाद जब ग्रामवासियों को शौचालय बनवाने की बात कही गई तो अधिकांश लोगों ने सरकार से सहायता दिलाने की बात कही। ऐसी स्थिति में विनोद ने तय किया कि सर्वप्रथम अपने घर में शौचालय का निर्माण किया जाय। अपने घर में शौचालय निर्माण का कार्य प्रारंम्भ करने के साथ ही उन्होंने उन लोगों को चिन्हांकित किया जो स्वयं से शौचालय का निर्माण नही करवा सकते थे। ऐसे 19 परिवारों को उन्होंने अपनी ओर से सहयोग करते हुये स्वच्छता के प्रति जागरूक रहने का संकल्प भी दिलाया।

विनोद सिंह के गाँव की स्वच्छता के प्रति लगन और सहयोग की भवना को देख कर ग्रामवासियों ने गाँव की स्वच्छता के लिये अपना कदम बढ़ाना प्रारम्भ किया। इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ महीनों में ग्राम पंचायत रिखी खुले मे शौच से मुक्त हो गया। विनोद सिंह का यह अभियान अभी थमा नहीं है। वह अपने ग्राम पंचायत को सम्पूर्ण रूप से स्वच्छ करने के लिये संकल्पित है। उनके द्वारा दिखाई गई राह उनसभी लोगों के लिये प्रेरणा–स्रोत है जो जागरूक हैं और जिनके पास संसाधन हैं।

ज्ञान. आवाज़. लोकतंत्र.
प्रिया

unicef
for every child

केस स्टडी

नंबर 10 **मई, 2017**

प्रयास और विश्वास बना परिणाम

सरगुजा जिले के ग्राम पचांयत सायर के सरपंच कलेश्वर प्रसाद सिंह पूरे जोश के साथ अपने क्षेत्र में लोगों की सेवा करते हैं। उनका विश्वास है कि विकास के अन्य कामों के साथ साफ–सफाई भी जरूरी है। कलेश्वर प्रसाद मानते हैं कि इससे न केवल बीमारी से बचा जा सकता है, बल्कि बीमारी में होने वाले खर्च बचाकर आर्थिक रूप से भी आगे बढ़ा जा सकता है।

नाम : कलेश्वर प्रसाद
उम्र : 38 वर्ष
शिक्षा : 12वीं
गांव : सायर
वि.ख. : उदयपुर

कलेश्वर प्रसाद बताते है स्वच्छता के बारे में तो उन्हें बचपन से बताया गया था किन्तु ग्राम पंचायत के स्तर पर सम्पूर्ण स्वच्छता कैसे लाया जाय यह उनकी समझ में नहीं आ रहा था। जनपद पंचायत की ओर से आयोजित कार्यशाला में स्वच्छ भारत मिशन की जानकारी मिलने के बाद उनको स्वच्छता के कुछ घटकों और आयामों को समझने का अवसर मिला। इससे उनके मन में गाँव के स्तर पर स्वच्छता को फैलाने का विश्वास भी मिला।

अपनी समझ को कार्यरूप में परणित करने के लिये उन्होंने गाँव के सभी हिस्सों का नियमित भ्रमण करना और ग्रामीणों को उनके घर में ही बैठ कर स्वच्छता को अपने व्यवहार में लाने का प्रयास आरम्भ किया। कलेश्वर प्रसाद बताते है भ्रमण के दौरान उन्हे पता चला की लोगों के घरों में पानी की बहुत समस्या है और इसकी वजह से गाँव में शौचालय के उपयोग की आदत प्रभावित हो रही है। ग्रामवासियों के द्वारा पानी की मांग को पूरा करने के लिये उन्होंने ग्राम पंचायत के अन्य प्रतिनिधियों के साथ गाँव के अन्य प्रमुख लोगों के साथ मिलकर पानी के प्रबंधन की योजना भी ध्यान देना शुरू किया। इस बीच गाँव के लोगों में स्वच्छता के लिये शौचालय का निर्माण और उपयोग तथा व्यवहार परिवर्तन के लिये जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन भी कराया गया।

इन प्रयासों के बाद गाँव के लोगों ने स्वच्छ के काम में सहयोग देना शुरू किया। कलेश्वर प्रसाद कहते है लोगों के सहयोग से पूरे गाँव में एक नई उर्जा और विश्वास का संचार हुआ। इस दौरान जिन घरों में शौचालय नही बना था उनको प्राथमिकता के आधार पर शौचालय का निर्माण के लिये आर्थिक सहयोग दिलवाया गया। कुछ ही महीनों में गाँव के सभी घरों मे शौचालय का निर्माण का काम पूरा हो गया और लोग उनका उपयोग भी करने लगे।

कलेश्वर प्रसाद कहते हैं कि पहले उनकी पंचायत में चारों तरफ गंदगी का अम्बार लगा रहता था लेकिन अब स्वच्छता बढ़ रही है। उनके अनुसार ग्रामवासियों के व्यवहार में परिवर्तन भी दिखता है। कलेश्वर प्रसाद ने यह साबित कर दिखाया है कि यदि विश्वास के साथ निरंतर प्रयास किया जाय तो कार्य का परिणाम जरूर मिलता है।

ज्ञान. आवाज़. लोकतंत्र.
प्रिया

unicef
for every child